एम. ए. हिन्दी (पूर्व)
अनिवार्य
प्रश्न पत्र– प्रथम
प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

पाठ्य विषय–

व्याख्या एवं विवेचना के लिए निम्नांकित 6 कवियों का अध्ययन किया जाएगा।

1. **विद्यापति –** विद्यापति पदावली संपा – रामवृक्ष बेनीपुरी। (कोई – 25 पद) प्रारभिक।

2. **कबीर –** कबीर ग्रंथावली, संपादक डॉ. श्यामसुंदर दास। (100 साखियाँ तथा 25 पद)
निर्धारित सांखियाँ एवं पद – गुरूदेव का अंग 1 से 10 सुमिरण का अंग 1 से 10 रह को अंग 1 से 10, ग्यान बिरह कौ अंग 1 से 10 परचा कौ अंग 1 से 10 रस कौ अंग 1 से 10, परचा को अंग 1 से 10 रस कौ अंक 1 से 5 निहकर्मी पतिव्रता 1 से 10 चितावणी 1 से 10 माय 1 से 5, काल कौ अंग 1 से 10 तक।

पद संख्या – 11, 16 ,23, 24, 27, 33, 40, 43, 51, 72, 74, 89, 92, 95, 98, 103, 108, 111, 180, 184, 287, 296, (25 पद)

3. **जायसी –** पद्मावत, संपा– आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नखशिख, नागमती वियोग खण्ड।

4. **सूरदास –** भ्रमरगीत सार, संपा– आचार्य रामचंद्र शुल्क (50 पद) पद संख्या 1 से 10, 21 से 30, 51 से 60, 61 से 70, 81 से 90, (50 पद)

5. **तुलसीदास –** रामचरित मानस (गीता प्रेस) सुंदर काण्ड 50 दोहे एवं चौपाई (प्रारंभिक)

6. **बिहारी लाल** – बिहारी रत्नाकर, संपा– जगन्नाथ प्रसाद रत्नाकर (प्रारभिक 100 दोहे)

द्रतपठन –

द्रुत पाठ हेतु निम्नांकित दस कवियों का अध्ययन किया जाना है –
1. अमीर खुसरो, 2. नंद दास, 3. मीरा बाई, 4. रैदास, 5. रहीम, 6. रसखान, 7. केशवदास, 8. देव, 9. भूषण, 10. पद्माकर।

एम. ए. हिन्दी (पूर्व)
अनिवार्य
प्रश्न पत्र– द्वितीय
आधुनिक हिन्दी काव्य

पाठ्य विषय–

1. मैथिली शरण गुप्त – साकेत (नवम, सर्ग)
2. जय शंकर प्रसाद – कामायानी (चिन्ता, श्रद्धा, लज्जा)
3. पं. सूर्यकांत त्रिपाठी – राम की शक्तिपूजा, सरोज स्मृति एवं कुकुरमुत्ता ''निराला''
4. सुमित्रानंद पंत – परिवर्तन मौका विहार, हिमाद्री मौन निमंत्रण आ धरती कितना देती है, शीर्षक से 5 कविताएं।
5. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय – नदी के द्वीप, असाध्य वीणा, बावरा अहेरी।
6. नागार्जुन (10 कविताएं) – बादल को घिरते देख है, सिंदूर तिलकित भाल, बंसत की आगवानी कोई आए तुमसे सीखे, शिशिर विषकन्या, तो फिर क्या हुआ, यह तुम थी, कोयल आज बोली है, अकाल और उसके बाद, शासन की बंदूक।

द्रुतपठन –

द्रुत पाठ हेतु निम्नाकिंत 11 कवि निर्धारित है –
1. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' 2. जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' 3. महादेवी वर्मा, 4. हरिवंश राय बच्चन, 5. त्रिलोचन शास्त्री, 6. भवानी प्रसाद मिश्र, 7. धर्मवीर भारती, 8. रधुवीर सहाय, 9. घूमिल, 10. दुष्यंत कुमार, 11. मुकुटधर पांडेय।

एम. ए. हिन्दी (पूर्व)
अनिवार्य
प्रश्न पत्र– तृतीय
आधुनिक गद्य साहित्य

पाठ्य विषय–

व्याख्या एवं विवेचन के लिए निर्धारित

1. चंद्रगुप्त (जयशंकर प्रसाद)
2. आषाढ़ का एक दिन (मोहन राकेश)
3. गोदान (मुंशी प्रेमचंद)
4. बाणभटट् की आत्मकथा (आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी)

5. **निबंध संकलन –**

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी	–	''साहित्य की महत्ता''
आचार्य रामचंद्र शुक्ल	–	''करूणा''
आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी	–	''भारतीय साहित्य की प्राण शक्ति''
आचार्य नंद दुलारे बाजपेयी	–	''निराला''
विद्या निवास मिश्र	–	''चंद्रमा मानसो जातः''
कुबेर नाथ राय	–	''हरी हरी दूब और लाचार क्रोध''
हरिशंकर परसाई	–	''भोलाराम का जीव''

6. **कहानी संकलन** –

चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी'	–	'उसने कहा था'
जय शंकर प्रसाद	–	'पुरस्कार'
प्रेमचंद	–	'मंत्र'
निर्मल वर्मा	–	'परिन्दे'
उषा प्रियंवदा	–	'वापसी'
कृष्णा सोबती	–	'कहीं नही, कोई नहीं'
रांगेय राघव	–	'बिरादरी बाहर'
चरितात्मक कृति–आवारा मसीहा	–	विष्णु प्रभाकर

द्रुतपाठ हेतु निम्नांकित नाटककार, उपन्यासकार, निबंधकार, कहानीकार और विधाओं के रचनाकारों का अध्ययन होना है –

1. **नाटककार –**
   1. भारतेन्दु हरिशचन्द्र
   2. डॉ. रामकुमार वर्मा
   3. लक्ष्मी नारायण मिश्र
   4. धर्मवीर भारती
   5. लक्ष्मी नारायण लाल

2. **उपन्यासकार –**
   1. जैनेन्द्र
   2. भगवती चरण वर्मा
   3. अमृतलाल नागर
   4. भीष्म साहनी
   5. मन्नू भण्डारी

3. **निबंधकार –**

1. भारतेन्दु हरिशचन्द्र
2. प्रताप नारायण मिश्र
3. बाबू श्याम सुंदर दास
4. सरदार पूर्ण सिंह
5. डॉ. नगेन्द्र

4. कहानीकार –

1. रांगेय राघव
2. अज्ञेय
3. यशपाल
4. फणीश्वर नाथ रेणु
5. भीष्म साहनी

5. स्फुट ग्रंथ –

1. अमृतराय (कलम का सिपाही)
2. शिव प्रसाद सिंह (उत्तरयोगी)
3. हरिवंश राय बच्चन (क्या भूलूं क्या याद करूँ)
4. राहुल सांकृत्यायन (घुमक्कड़ शास्त्र)
5. माखन लाल चतुर्वेदी (साहित्य देवता)

एम. ए. हिन्दी (पूर्व)
अनिवार्य
प्रश्न पत्र– चतुर्थ
भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा

पाठ्य विषय–

(क) भाषाविज्ञान –

1. **भाषा और भाषाविज्ञान –** भाषा की परिभाषा और अभिलक्षण, भाषा व्यवस्था और भाषा–व्यवहार, भाषा संरचना और भाषिक– प्रकार्य। भाषाविज्ञान– स्वरूप एवं व्याप्ति, अध्ययन की दिशाएं – वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक।
2. **स्वनप्रक्रिया –** स्वनविज्ञान का स्वरूप एवं शाखाएं वागवयव और उनके कार्य, स्वन की अवधारणा और स्वनों की वर्गीकरण, स्वनगुण, स्वनिक परिवर्तन। स्वनिम विज्ञान का स्वरूप, स्वनिम का अवधारणा, स्वनिम के भेद, स्वनिमिक विश्लेषण।
3. **व्याकरण –** रूप प्रक्रिया का स्वरूप और शाखाएं, रूपिम की अवधारणा और भेदमुक्त–आबद्ध अर्थदर्शी और संबंधदर्शी, संबंधदर्शी रूपिक के भेद और प्रकार्य।वाक्य की अवधारण अभिहितान्वयवाद और अन्विताभिधानवाद, वाक्य के भेद वाक्य–विशलेषण, निकटस्थ–अवयव विशलेषण, गहन–संरचना और बाह्य–संरचना।
4. **अर्थविज्ञान –** अर्थ की अवधारणा, शब्द और अर्थ का संबंध पर्यावरण, अनेकार्थता, विलोमता, अर्थ–परिवर्तन।
5. **साहित्य और भाषाविज्ञान –** साहित्य के अध्ययन में भाषा–विज्ञानों के अंगों का उपयोगिता।

(ख) हिन्दी भाषा –

1. **हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि –** प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएं– वैदिक तथा लौकिक संस्कृत और उनकी विशेषताएं। मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएं – पालि, प्राकृत – शौरसेनी, अर्धमागधी, मागधी, अपभ्रंश और उनकी विशेषताएं। आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएं और उनका वर्गीकरण।
2. **हिन्दी का भौगोलिक विस्तार –** हिन्दी की उपभाषाएं, पश्चिमी हिन्दी पूर्वी हिन्दी राजस्थानी, बिहारी तथा पहाड़ी और उनकी बोलियां। खड़ी बोली, ब्रज और अवधी की विशेषताएं।
3. **हिन्दी का भाषिक स्वरूप –** हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था – खंड्य खंड्येतर। हिन्दी शब्द रचना – उपसर्ग, प्रत्यय, समास। रूपरचना– लिंग, वचन और कारक– व्यवस्था के संदर्भ में हिन्दी के संज्ञा, सर्वनाम विशेषण और क्रियारूप। हिन्दी वाक्य – रचना – पदक्रम और अन्विति।
4. **हिन्दी के विविध रूप –** संपर्क – भाषा, राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी, माध्यम – भाषा, संचार भाषा, हिन्दी की संविधानिक स्थिति।
5. **हिन्दी में कम्प्यूटर सुविधाएं –**
   आंकड़ा – संसाधन और शब्द – संसाधन, वर्तनी – शोधक, मशीनी अनुवाद, हिन्दी भाषा – शिक्षण।

एम. ए. हिन्दी (पूर्व)
अनिवार्य
प्रश्न पत्र– पंचम
हिन्दी साहित्य का इतिहास

पाठ्य विषय–

1. इतिहास– दर्शन और साहित्येतिहास।
2. हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा, आधारभूत सामग्री और साहित्येतिहास के पुनर्लेखन की समस्याएं।
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास – काल विभाजन, सीमा निर्धारण और नामकरण।
4. हिन्दी साहित्य – आदिकाल की पृष्ठभूमि, सिद्ध और नाथ–साहित्य, रासो–काव्य, जैन–साहित्य।
5. हिन्दी साहित्य के आदिकाल का ऐतिहासिक परिदृश्य, साहित्यिक प्रवृत्तियां, काव्यधाराएं गद्य साहित्य प्रतिनिधि रचनाकार और उनकी रचनाएँ।
6. पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक–चेतना एवं भक्ति–आंदोलन, विभिन्न काव्यधाराएं तथा उनका वैशिष्टय।
7. प्रमुख निर्गुण संत कवि और उनका अवदान।
8. भारत में सूफी मत का विकास तथा प्रमुख सूफी कवि और काव्यग्रंथ, सूफी काव्य में भारतीय संस्कृति एवं लोकजीवन के तत्व।
9. राम और कृष्ण काव्य, रामकृष्ण काव्येतर काव्य, भक्तितर काव्य, प्रमुख कवि और उनका रचनागत वैशिष्ट्य। भक्तिकालीन गद्य– साहित्य।
10. उत्तरमध्यकाल (रीतिकाल) की ऐतिहासिक पृष्टभूमि, काल–सीमा और नामकरण, दरबारी संस्कृति और लक्षण–ग्रंथो की परंपरा, रीतिकालीन साहित्य की विभिन्न धाराएं (रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त) प्रवृत्तिया और विशेषताएं, प्रतिनिधि रचनाकार और रचनाएं। रीतिकालीन गद्य साहित्य।
11. आधुनिककाल की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक, पृष्टभूमि, सन् 1856 ई. की राजक्रांति और पुर्नजागरण।
12. भारतेंदु युग – प्रमुख साहित्यकार, रचनाएं और साहित्यिक विशेषताएं।
13. द्विवेदी युग– प्रमुख साहित्यकार, रचनाएं और साहित्यिक विशेषताएं।
14. हिन्दी स्वच्छंदतावादी चेतना का अग्रिम विकास छायावादी काव्य– प्रमुख साहित्यकार, रचनाएं और साहित्यिक विशेषताएं।
15. उत्तरछायावादी काव्य की विविधि प्रवृत्तियां – प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता, नवगीत, समकालीन कविता। प्रमुख साहित्यकार, रचनाएं और साहित्यिक विशेषताएं।
16. हिन्दी गद्य की प्रमुख विधाओं (कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, संस्मरण, रेखचित्र, जीवनी, आत्मकथा, रिपोर्ताज आदि) का विकास।
17. हिन्दी आलोचना का उद्‌भव और विकास।
18. दक्खिनी हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त परिचय।
19. संस्कृत साहित्य का इतिहास।
20. हिन्दीतंर क्षेत्रों तथा देशांतर में हिन्दी भाषा और साहित्य।

एम. ए. हिन्दी (पूर्व)
प्रश्न पत्र–चतुर्थ
साहित्यशास्त्र तथा सौन्दर्यशास्त्र

पूर्णांक : 100

इकाई – 1	चिंतक तथा, प्रमुख सिद्धांत – भरत, दण्डी, वामन, आनन्दवर्धन। राजशेखर, कुन्तक, क्षेमेन्द्र, मम्मट, पण्डितराज, जगन्नाथ।	20
इकाई – 2	नाट्य शास्त्र – भरतमुनि – प्रथम अध्याय	20
इकाई – 3	नाट्य शास्त्र – भरतमुनि – द्वितीय अध्याय	20
इकाई – 4	काव्य प्रकाश – मम्मट – प्रथम उल्लास	20
इकाई – 5	काव्य प्रकाश – मम्मट – द्वितीय उल्लास	20

एम. ए. हिन्दी (पूर्व)
प्रश्न पत्र– पंचम्
काव्य

पूर्णांक : 100

इकाई – 1	(क) मेघदूत (पूर्वमेध) कालिदास–व्याख्या।	15
	(ख) मेघदूत कालिदास–आलोचनात्मक प्रश्न	10
इकाई – 2	(क) मृच्छकटिक – शूद्रक (अंक 1, 3, 10 व्याख्या हेतु)	20
	(ख) मृच्छकटिक – आलोचनात्मक प्रश्न सम्पूर्ण से	10
इकाई – 3	नैषधीयचरित (प्रथम सर्ग) श्री हर्ष (व्याख्या श्लोक 1 से 40 तथा 110 से अन्त तक।	20
इकाई – 4	रत्नावली नाटिका व्याख्या हेतु।	15
इकाई – 5	आलोचनात्मक प्रश्न रत्नावली नाटिका अथवा नैषधीयचरित से।	10

एम. ए. हिन्दी (अंतिम)
अनिवार्य
प्रश्न पत्र– षष्ठम्
काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन

प्रस्तावना–

रचना के वैशिष्ट्य और मूल्यबोध के उद्घाटन के लिए काव्यशास्त्र और साहित्यालोचन का ज्ञान अनिवार्य है। इनसे साहित्यिक समझ विकसित होती है। वह दृष्टि मिलती है जिसके आधार पर साहित्य के मर्म और मूल्यवत्ता की वास्तविक परख की जा सके। सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश के साथ रचना का आस्वद प्राप्त करने, रचना को उसकी समग्रता से समझने और जांचने परखने के लिए भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिन्दी के निजी साहित्यालोचन का अध्ययन समीचीन है।

पाठ्य विषय –

क) संस्कृत काव्यशास्त्र	–	काव्य लक्षण, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन काव्य के प्रकार।
– रस सिद्धान्त	–	रस का स्वरुप, रस निष्पति, रस के अंग, साधारणी करण, सहृदय की अवधारणा।
– अलंकार सिद्धान्त	–	मूल स्थापनाएँ, अलंकारों का वर्गीकरण।
– रीति सिद्धान्त	–	रीति की अवधारणा, काव्य गुण रीति एवं शैली, रीति सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ।
– वक्रोक्ति सिद्धान्त	–	वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद, वक्रोक्ति एवं अभिव्यंजनावाद।
– ध्वनि सिद्धांत	–	ध्वनि का स्वरुप, ध्वनि सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएँ, ध्वनि काव्य के प्रमुख भेद, गुणीभूत–व्यंग, चित्रकाव्य
– औचितय सिद्धान्त	–	प्रमुख स्थानाएं, औचित्य भेद।
ख) पाश्चात्य काव्य शास्त्र	–	
– प्लेटो	–	काव्य सिद्धान्त
– अरस्तू	–	अनुकरण–सिद्धान्त, त्रासदी विवेचन
– लोंजाइनस	–	उदात्त की अवधारणा
– टी. एस. इलियट	–	परम्परा की परिकल्पना और वैयक्तिक प्रज्ञा, निर्वेयक्तिकता का सिद्धान्त,वस्तुनिष्ठ समीकरण, संवेदनशीलता का असाहचर्य।
– आई. ए. रिचर्ईस	–	रागात्मक अर्थ, संवेगों का संतुलन, व्यावहारिक आलोचना।
– सिद्धान्त और वाद	–	अभिजात्यवाद, स्वच्छंदतावाद, अभिव्यंजनावाद,
	–	मार्क्सवाद, मनोविश्लेषण तथा अस्तित्ववाद।
– आधुनिक समीक्षा की विशिष्ट प्रवृत्तियाँ	–	संरचनावाद, शैली विज्ञान, विखंडनवाद उत्तर आधुनिकतावाद।
ग) हिन्दी कवि–आचार्यो का काव्यशास्त्रीय चिंतन	–	लक्षण–काव्य–परम्परा एवं कवि–शिक्षा
घ) हिन्दी आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियाँ–	–	शास्त्रीय, व्यक्तिवादी, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, प्रभाववादी, मनोविश्लेषणवादी, सौन्दर्यशास्त्रीय, शैली वैज्ञानिक और समाजशास्त्रीय।
ड) व्यावहारिक समीक्षा	–	प्रश्न पत्र में पूछे गये किसी काव्यांश की स्वविवेक के अनुसार समीक्षा।

एम. ए. हिन्दी (अंतिम)
अनिवार्य
प्रश्न पत्र– सप्तम्
प्रयोजन मूलक हिन्दी

प्रस्तावना–

भाषा मानव जीवन की अनिवार्य सामाजिक और व्यवहारिक चेतना है, जिसके दो मुख्य आयाम या प्रकार्य हैं –सौंदर्य परक और प्रयोजन परक। भाषा के प्रयोजन परक आयाम का संबंध हमारी सामाजिक आवश्यकताओं और जीवन व्यवहार से है। और है। उत्तर आधुनिक काल में जीवन और समाज की विभिन्न आवश्यकताओं और दायित्वों की पूर्ति के लिए विभिन्न व्यवहार क्षेत्रों में उपयोग की जानेवाली प्रयोजन मूलक हिन्दी का अध्ययन अति अपेक्षित है। इसके विविध आयामों से न केवल रोजगार या जीविका की समस्या हल होगी अपितु राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा का संस्कार भी दृढ़ होगा।

पाठ्य विषय –

खण्ड (क)

कामकाजी हिन्दी –

– हिन्दी के विभिन्न रूप	–	सर्जनात्मक भाषा, संचार भाषा, राजभाषा, माध्यम भाषा मातृभाषा
– कार्यालयी हिन्दी (राजभाषा) के प्रमुख प्रकार्य	–	प्रारूपण, पत्र–लेखन, संक्षेपण,
	–	पल्लवन, टिप्पणी
– पारिभाषिक शब्दावली	–	स्वरूप एवं महत्व, पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के सिद्धांत

– ज्ञान–विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली

हिन्दी कम्प्यूटिंग –

– कम्प्यूटर – परिचय, रूपरेखा, उपयोग तथा क्षेत्र, वेब पब्लिकेशन का परिचय।
– इंटरनेट सम्पर्क उपकरणों का परिचय, प्रकार्यात्मक रख–रखाव, एवं इंटरनेट समय **मितव्ययिता के सूत्र।**
– लिंक, ब्राउलिंग, ईमेल भेजना/प्राप्त करना, हिन्दी के प्रमुख इंटरनेट पोर्टल, डाउन लोडिंग व अपलोडिंग, हिन्दी साफ्टवेयर, पैकेज।

खण्ड (ख)

पत्रकारिता –

– पत्रकारिता : स्वरूप एवं विभिन्न प्रकार
– हिन्दी पत्रकारिता का संक्षिप्त इतिहास
– समाचार लेखनकला
– समाचार लेखनकला
– संपादन के आधारभूत तत्व
– व्यवहारिकता प्रूफ शोधन
– शीर्षक की संरचना, लीड, इन्ट्रो एवं शीर्षक संपादन
– सम्पादकीय लेखन
– पृष्ठ सज्जा
– साक्षात्कार, पत्रकार वार्ता, एवं प्रेस प्रबंधन
– प्रमुख प्रेस कानून एवं आचार संहिता

खण्ड (ग)

मीडिया लेखन –

– जनसंचार – प्रौद्योगिकी एवं चुनौतियाँ

– विभिन्न जनसंचार – मुद्रण, श्रव्य, दृश्य–श्रृव्य, इंटरनेट

माध्यमों का स्वरूप

– श्रव्य माध्यम (रेडियो) – मौखिक भाषा की प्रकृति। समाचार लेखन एंव वाचन/रेडियोनाटक/उद्घोषणा लेखन।

– दृश्य–श्रव्य माध्यम – (फिल्म, टेलीवीजन एवं विडियो)
दृश्य माध्यमों में भाषा की प्रकृति। दृश्य एवं श्रव्य सामाग्री का सामंजस्य।
पार्श्व वाचन (वायस ओवर) पटकथा लेखन।
टेलीन्ड्रामा/डॉक्यूड्रामा, संवाद लेखन।
साहित्य की विधाओं का दृश्य माध्यमों में रूपांतरण। विज्ञापन की भाषा।

– इंटरनेट – सामग्री सृजन (Content Creation)

खण्ड (घ)

अनुवाद : सिद्धांत एवं व्यवहार

– अनुवाद का स्वरूप, क्षेत्र, प्रक्रिया एवं प्रविधि
– हिन्दी की प्रयोजनीयता में अनुवाद की भूमिका
– कार्यालयीन हिन्दी और अनुवाद
– जनसंचार माध्यमों का अनुवाद
– विज्ञापन में अनुवाद
– वैचारिकता साहित्य का अनुवाद
– वाणिज्यिक–अनुवाद
– वैज्ञानिक, तकनीकी तथा प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में अनुवाद
– विधि–साहित्य की हिन्दी और अनुवाद
– व्यावहारिक–अनुवाद–अभ्यास
– कार्यालयी अनुवाद – कार्यालयी एवं प्रशासनिक शब्दावली, प्रशासनिक–प्रयुक्तियाँ, पदनाम विभाग आदि।
– पत्रों के अनुवाद
– पदनामों, अनुभागों, दस्तावेजों, प्रतिवेदनों के अनुवाद
– बैंक–साहित्य के अनुवाद का अभ्यास
– विधि साहित्य के अनुवाद का अभ्यास
– साहित्यिक अनुवाद के सिद्धांत एवं व्यवहार : कविता, कहानी, नाटक
– सारानुवाद
– दुभाषिया प्रविधि
– अनुवाद पुनरीक्षण एवं मूल्यांकन

एम. ए. हिन्दी (अंतिम)
अनिवार्य
प्रश्न पत्र– अष्टम्
भारतीय साहित्य

प्रस्तावना –

भारतीय भाषाओं में हिन्दी भाषा और साहित्य का स्थान अन्य प्रांतीय भाषाओं की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण है। इसलिए हिन्दी साहित्य के अध्ययन को अधिकाधिक गंभीर तथा प्रशस्त बनाना अत्यंत आवश्यक है। एक समेकित भारतीय साहित्य की रूपरचना के लिए हिन्दी का भारतीय संदर्भ सर्वथा प्रासंगिक है। इस दृष्टि से स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए भारतीय भाषाओं के साहित्य का ज्ञान अनिवार्य है। तभी उनके ज्ञान–क्षितिज एवं सांस्कृतिक दृष्टि का विकास होगा यही नहीं इससे हिन्दी अध्ययन का अंतरंग विस्तार भी होगा। इस प्रश्न पत्र के चार खण्ड होंगे। प्रत्येक खण्ड से एक–एक प्रश्न का उत्तर देना अनिवार्य होगा।

पाठ्य विषय –

प्रथम खण्ड –

1. भारतीय साहित्य का स्वरूप
2. भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्यायें
3. भारतीय साहित्य में आज के भारत का बिंब
4. भारतीयता का समाज शास्त्र
5. हिन्दी साहित्य में भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति

द्वितीय खण्ड –

इसके अंतर्गत हिन्दीतर भाषा साहित्य का अध्ययन अपेक्षित है, जिसमें पूर्वाचल भाषा वर्ग के बंगला अथवा उड़िया साहित्य का सामान्य अध्ययन किया जायेगा एवं पूर्वांचल भाषा वर्ग (उड़िया, बंगला, असमिया, मणिपुरी) के साहित्य इतिहास की सामान्य जानकारी भी अपेक्षित है।

तृतीय खण्ड –

तृतीय खण्ड के अंतर्गत तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षित है जिसमें अंग्रेजी या संस्कृत के साथ हिन्दी को जोड़कर अध्ययन करना होगा। सामान्यतया यह अध्ययन साहित्य के इतिहास से ही संबंधित रहेगा।

चतुर्थ खण्ड –

इसके अंतर्गत 1 उपन्यास, 1 कविता संग्रह तथा 1 नाटक का अध्ययन अपेक्षित है, जिन पर केवल आलोचनात्मक प्रश्न ही पूछा जायेगा।

उपन्यास	–	मृत्युंजय (असमिया) विरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य
कविता संग्रह	–	वर्षा की सुबह (उड़िया–सीताकांत महापात्र)
नाटक	–	हयवदन (कन्नड़, गिरीश कर्नाड)

एम. ए. हिन्दी (अंतिम)
वैकल्पिक
प्रश्न पत्र– नवम्
साहित्य वर्ग–(क) लोक साहित्य

पाठ्य विषय–

इस प्रश्न – पत्र मे सैद्धिान्तिक अध्ययन के साथ संबंधित क्षेत्र के लोक साहित्य का गहन अध्ययन अपेक्षित है तथा इससे संबंधित प्रायोगिक कार्य भी।

खण्ड (क) –

- लोक और लोकवार्ता और लोक–विज्ञान
- लोक संस्कृति – अवधारण, लोकवार्ता और लोक संस्कृति, लोक – संस्कृति, और साहित्य
- लोक साहित्य – अवधारण, संस्कृत वाडयम में लोकोन्मुखता।
- हिन्दी के आरंभिक साहित्य में लोकतत्व, वर्तमान अभिजात साहित्य और लोक साहित्य का अंतःसंबंध, लोक साहित्य का अन्य सामाजिक विज्ञानों से संबंध।
- भारत मे लोक साहित्य के अध्ययन का इतिहास
- हिन्दी लोक साहित्य के विशिष्ट अध्येता। लोक साहित्य का अध्ययन–प्रक्रिया एवं संकलन की समस्यायें।
- लोक साहित्य के प्रमुख रूपों का वर्गीकरण–
  लोकगीत, लोकनाट्य, लोक–कथा, लोक–गाथा, लोक–नृत्य–नाटय, लोक–संगीत लोकगीत–संस्कार–गीत, व्रत–गीत, श्रम–गीत, ऋतुगीत, जाति–गीत, लोक नाट्य, रामलीला, रास लीला, कीर्तनिया स्वांग, यक्षगान, भवाई, संपेड़ा, विदेयिा, माच, भांड, तमाशा, नौटंकी,जात्रा, कथकली–हिन्दी लोक नाट्य की परम्मपरा एवं प्रविधि। हिन्दी नाटक और रंगमंच पर लोकनाटयों का प्रभाव
- लोक कथा – व्रत कथा, परी–कथा, नाग–कथा, बोध–कथा, कथानक रूढ़ियाँ अथवा अभिप्राय – लोक–गाथा–ढोला–मारू, गोपीचंद, भरभरी, लोरिकायन, नल–दमयंती, लैला–मजनूँ, हीर–राझां, सोहनी–महिवाल, लोरिक–चंदा, बगडावत, आल्हा–हरदील।
- लोक–नृत्य नाट्य
- लोक–संगीत – लोकवाद्य तथा विशिष्ट धुनें।
- लोक भाषा– लोक सुभाषित, मुहावरे, कहावतें, पहेलियाँ

खण्ड (ख)

- छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य का अध्ययन – लोकगीत, लोकनाट्य, लोक कथा, लोक गाथा, लोकोक्ति, लोक सुभाषित, मुहावरे पहेलियाँ इत्यादि।

एम. ए. हिन्दी (अंतिम)
वैकल्पिक
प्रश्न पत्र– नवम्
साहित्य वर्ग–(ख) छत्तीसगढ़ी भाषा और साहित्य

पाठ्य विषय–

– छत्तीसगढ़ी भाषा का इतिहास, मानकरण, भौगोलिक सीमा, शब्द कोश

– छत्तीसगढ़ी साहित्य का इतिहास, युग प्रवृतियाँ

– छत्तीसगढ़ी कविता एवं कवि (व्याख्या एवं विवेचना) निर्धारित कवि–
पं. सुन्दरलाल शर्मा पं. शुकलाल प्रसाद पाण्डेय, प्यारेलाल गुप्त, पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी विप्र, हरिठाकुर, कपिलनाथ कश्यप

– द्रुत पठन हेतु छत्तीसगढ़ी गद्य एवं पद्य विद्या के निर्धारित साहित्य कार–गोपाल मिश्र डॉ. नरेन्द्र देव शर्मा, कुंज बिहारी चौबे, डॉ. विनय पाठक, नंद किशोर तिवारी, श्यामलाल चतुर्वेदी, लक्ष्मण मस्तुरिहा, पवन दीवान, डॉ. मैथ्यू जहानी जर्जर, नारायाण लाल परमार, नरसिहं दास, वैष्णावं पं. मेदिनी प्रसाद पाण्डेय

– छत्तीसगढ़ी गद्य साहित्य का उद्‌भव विकास विद्या – उपन्यास, नाटक, एकांकी, निबंध, कहानी।

एम. ए. हिन्दी (अंतिम)
वैकल्पिक
प्रश्न पत्र– दशम्
(व्यावसायिक वर्ग–1) पत्रकारिता–प्रशिक्षण

पाठ्य विषय–

- पत्रकारिता का स्वरूप और प्रमुख प्रकार
- विश्व पत्रकारिता का उदय। भारत में पत्रकारिता का आरंभ
- हिन्दी पत्रकारिता का उद्‌भव और विकास
- समाचार पत्रकारिता के मूल तत्व – समाचार संकलन तथा लेखन के मुख्य आयाम।
- संपादन कला के सामान्य सिद्धान्त – शीर्षकीकरण, पृष्ट–विन्यास, आमुख और समाचार पत्र के प्रस्तुति प्रक्रिया।
- समाचार पत्रों के विभिन्न स्तम्भों की योजना।
- दृश्य सामग्री (कार्टून, रेखाचित्र, ग्रैफिक्स) की व्यवस्था और फोटो पत्रकारिता।
- समाचार के विभिन्न स्त्रोत
- संवाददाता की अर्हता, श्रेणी एवं कार्य पद्धति
- पत्रकारिता से संबंधित लेखन – संपादकीय, फीचर, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, खोजी– समाचार, अनुवर्तन (फालोआप) आदि की प्रविधि।
- इलेक्ट्रानिक मीडिया की पत्रकारिता– रेडियों टी.वी. वीडियों केबल, मल्टीमीडिया और इंटरनेट की पत्रकारिता।
- प्रिंट पत्रकारिता और मुद्रण कला, प्रूफ शोधन, ले आउट पृष्ट सजा।
- पत्रकारिता का प्रबंधन – प्रशासनिक व्यवस्था, ब्रिकी, तथा वितरण वयवस्था।
- भारतीय संविधान में प्रदत्त मौलिक, अधिकार, सूचनाधिकार एवं मावनधिकार।
- मुक्त प्रेस की अवधारण।
- लोक सम्पर्क तथा विज्ञापन।
- प्रसार भारती तथा सूचना प्रौद्यिगिकी।
- प्रेस संबंधी प्रमुख कानून तथा आचार संहिता।
- प्रजातांत्रिक व्यवस्था में चतुर्थ स्तम्भ के रूप में पत्रकारिता का दायित्व।

एम. ए. हिन्दी (अंतिम)
वैकल्पिक
प्रश्न पत्र–दशम्
(व्यावसायिक वर्ग–2) अनुवाद विज्ञान

पाठ्य विषय–

- अनुवाद – परिभाषा, क्षेत्र और सीमाएं।
- अनुवाद का स्वरूप – अनुवाद कला–विज्ञान अथवा शिल्प
- अनुवाद का इकाई – शब्द पदबंध, वाक्य पाठ
- अनुवाद की प्रक्रिया और प्रविधि – विश्लेषण, अंतरण पुनर्गठन
- अनुवाद प्रक्रिया के विविध चरण, स्त्रोत भाषा के पाठ का विश्लेषण एवं उसके अर्थग्रहण की प्रक्रिया, स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की तुलना तथा अर्थांतरण की प्रक्रिया। अनुदित पाठ का पुनर्गठन और अर्थ – संप्रेषण की प्रक्रिया। अनुवाद प्रक्रिया की प्रवृति।
- अनुवाद तथा समतुल्यता का सिद्धान्त
- अनुवाद के क्षेत्र एवं प्रकार – कार्यलयी, वैज्ञानिक एवं तकनीकी, साहित्यिकी, मानविकी, संचार माध्यम, विज्ञापन आदि।
- अनुवाद की समस्याएँ – सृजनात्मक अथवा साहित्यिक अनुवाद की समस्याएँ, कार्यालयी अनुवाद की समस्याएँ वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ, विधि साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ, कोश एवं पारिभाषिक शब्दार्थ के निर्माण की समस्याएँ, मीड़िया क्षेत्र के अनुवाद की समस्याएँ, विज्ञापन के अनुवाद की समस्याएँ।
- अनुवाद के उपकरण – कोश, पारिभाषिक, शब्दावली, थिसारस, कम्प्यूटर आदि।
- अनुवाद – पुनरीक्षण, संपादन, मूल्यांकन।
- मशीनी अनुवाद –
- अनुवाद की सार्थकता, प्रासंगिकता एवं व्यावसासिक परिदृश्य
- अनुवाद के गुण
- पाठ की अवधारण और प्रकृति

  पाठ– शब्द प्रति शब्द
  शाब्दिक अनुवार
  भावानुवाद
  छायानुवाद
  पूर्ण और अंशिक अनुवाद
  आशु अनुवाद
- व्यावहारिक अनुवार (प्रश्न पत्र मे दिये गये अंग्रेजी अवतरण की हिन्दी अनुवाद)